श्री राम चन्द्र जी की आरती

pdfformats.com

श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणं।

नव कंज-लोचन कंज-मुख कर, कंज-पद कंजारुणं॥

कंदर्प अगणित अमित छबि, नव-नील-नीरद सुन्दरं।

पट पीत मानहु तडित रूचि, शुचि नौमि जनक सुतावरं॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्य-वंश-निकंदनं।

रघुनन्द आनन्द कंद कोशल-चंद्र दशरथ-नन्दनं॥

शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अङ्ग विभूषणं।

आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम जित-खर-दूषणं॥

इतिवदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।

मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल दल-गंजनं॥

मनु जाहि राचेउ मिलहि सो बरु, सहज सुंदर सांवरो।

करुना निधान सुजान शीलु, सनेहु जानत रावरो॥

एही भांति गौरी असीस सुनि, सिय सहित हिय हरषीअली।

तुलसी भवानी पूजि पुनि-पुनि, मुदित मन मन्दिर चली॥

श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणं।

नव कंज-लोचन कंज-मुख कर, कंज-पद कंजारुणं॥

दोहा- जनि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषुन जाइ कहि।

मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥